नारी सक्षमीकरण के परिप्रेक्ष्य में '' आपका बंटी ''

प्रा. गंगाधर बालन्ना उषमवार
हिंदी विभाग,
श्री. सिध्देश्वर महाविद्यालय, माजलगांव,
तहसिल – माजलगांव,जिला – बीड़ 431131

साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है। वे सदा से ही नारी अस्तित्व के पारिवारिक और सामाजिक – पक्ष के प्रति पूर्ण रूप से सजग रही हैं। अपनी रचना–प्रक्रिया के बारे में उनका कहना है कि उनके सभी पात्र वास्तविक जीवन से ही आए हैं – ''मुझे जब भी कोई घटना या व्यक्ति 'क्लिक करता है – मैं कभी तुरन्त उस पर नहीं लिख पाती। उस समय तो उसे मन के किसी कोने या डायरी के किसी पृष्ठ पर उतारकर रख लेती हूँ। और फिर बाद में मन में बसे व्यक्ति घटना या समस्या को सार्थक विस्तार देने के लिए उनकी रचना का जन्म होता है। उस प्रकार '' आपका बंटी '' एक लघु उपन्यास है, जिसमें पारिवारिक विसंगति के शिकार पति–पत्नी के एकमात्र पुत्र बंटी को केन्द्र में रखकर उसके मानस का मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी चित्रण किया गया है। कॉलेज की प्रिंसीपल शकुन पति के अभाव की पीड़ा को पुत्र के प्रति प्रेम व्यक्त करके सहज होने का प्रयास करती है। उसके मन में कहां दबी ढकी आशा है कि शायद बंटी के कारण अजय उसके जीवन में फिर से आने को विवश हो जाएगा। तब एक अजीब – सी भावना उसके मन में आई – बंटी उसका बेटा ही नहीं है, वह एक हथियार भी है, जिससे वह अजय को टारचर कर सकती है, करेगी। अजय द्वारा प्रस्तावित तलाक के फार्म शकुन तक पहुँचा देते हैं और दोनों का संबंध विच्छेद हो जाता है।

बंटी ममी के दुःख में दुःखी होने के बावजूद यह नहीं सोच सका कि 'वह पापा को भूल सकता है, क्योंकि पापा तो उसे बहुत अच्छे लगते हैं। वकील चाचा कहते है कि ''जब बंटी की अपनी जिन्दगी होगी, अपनी इच्छाएँ, अपनी महत्वकांक्षाएँ, तब तुम्हारा कितना महत्त्व होगा उसकी जिंदगी में। '' ...1 मैं चाहता हूँ कि तुम अपने बारे में सोचना शुरू करो, बिल्कुल नए ढंग से, एकदम व्यावहारिक स्तर पर। तो शकुन को लगता है कि डाक्टर जोशी के 'आमंत्रण पर उसे गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए, क्योंकि उनका साथ पाकर शकुन महसूस करती है कि 'किसी का हल्का – सा स्पर्श भी कैसे जिन्दगी को किसी के साथ होने के अहसास और आश्वासन से भर देता है। उसे कभी–कभी आश्चर्य होता है कि उम्र के छत्तीस वर्ष पार कर लेने पर भी उसके मन में इन सब बातों के लिए कैशोर्य उम्रवाला उल्लास भी है और यौवन वाली उमंग भी।

जीवन का यह नया मोड़ उसे पापा और नई माँ के पास ले आता है। वहाँ अमि और जोत थे तो यहाँ टीनू है। इस नई माँ को वह मम्मी कैसे कह सकता है। यहाँ आकर उसे लगता है कि पापा भी पापा कहाँ रहे हैं ? वह जिस पापा को जानता था, वे तो यहाँ हैं ही नहीं। परिस्थितियों का यह नया रूप बंटी के

मन में एक अजीब – सी दहशत भर देता है। पापा को कसकर पकड़े रहने के बावजूद उसे यह भय बराबर बना रहता है कि पापा का हाथ छूट जाएगा और वह भीड़ में खो जाएगा। नई माँ का व्यवहार उसे सदा अपने से दूर ही रखता है। मन्नू भंडारी लिखती हैं – ''पता नहीं वहाँ से भेज भी कैसे दिया इस तरह, मैं तो बाबा सुनकर बंटी के मन में झटका–सा लगता है और वह वापिस मम्मी के पास जाना चाहता है, पर 'बाहर के ढेर–से शोर में उसका अपना सोचना भी दब गया। '' 2

बंटी की पारिवारिक स्थितियाँ सामान्य नहीं हैं, इसलिए उसके व्यवहार में अनेक असामान्यताएँ आ गई हैं। उसका ईगो अत्यंत प्रबल है इसलिए उसमें एकाधिकार की भावना सदैव विधमान है। उसके खिलौने हो या माता – पिता वह इन्हें किसी के साथ नहीं बाँट सकता। मीरा और डाक्टर जोशी के प्रति उसके मन में ईर्ष्या – भाव है क्योंकि वह इन्हें मम्मी और पापा के अलगाव का मूल कारण मानता है। सुखवाद के कारण अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति चाहता है। लेकिन विफलता के कारण विद्रोही बन जाता है। बंटी के व्यवहार में उसके पापा के स्वभाव और संस्कार देखकर शकुन सोचती है– ''...कैसे एक आदमी एक छोटे–से अणु में अपना चेहरा, मोहरा, आदत, स्वभाव, संस्कार–सब कुछ अपने बच्चें में सरका देता है।'' 3 वंशानुक्रम में बंटी ने माता पिता की योग्यता और अहं आदि गुण प्राप्त किए ह लेकिन प्रतिकूल परिस्थिति के कारण उसका स्वभाव एबनार्मल हो जाता है।

बंटी स्वभाव से जिज्ञासु है। कोई भी स्थिति हो, व्यक्ति अथवा वस्तु वह प्रत्येक रूप को तर्क की कसौटी पर परखना चाहता है। ममी का कालेज जाने के लिए तैयार होना उसे सदैव कौतूहल में डालता है क्योंकि ड्रेसिंग टेबुल पर रखी रंग बिरंगी शीशियों में जरूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने के बाद एकदम बदल जाती हैं। इतना ही नहीं, ममी उसे पापा की भी कोई बात कभी नहीं बताती। दोनों में क्यों लड़ाई हुई है, इतने बड़े लोग लड़ते क्यों हैं, इस लड़ाई में दोस्ती क्यों नहीं है, ममी डाक्टर साहब के साथ सटकर क्यों बैठती हैं – आदि प्रश्न उसे निरन्तर मथते हैं। मन्नू भंडारी लिखती हैं – ''अनैतिक रूप में देखकर वह अपराध भय–बोध से भर उठता है। ममी को खो देने के कारण उत्पन्न कुंठा उसे पापा की ओर ले जाती है, पर... दूर रहते थे तो लगता था पापा बहुत पास हैं ...पर पास रहकर लगता है कि वह इन पापा को जानता भी नहीं। '' 4

बंटी के साथ–साथ उसकी माँ शकुन की मनोदशा और प्रवृत्तियों का सहज और प्रकृत चित्रण है। उसकी विवशता, असमर्थता और महत्त्वकांक्षाएँ उसे कभी सहज नहीं रहने देते। वह एक सुन्दर शिक्षित, सौम्य महिला है जो कालेज की प्रिंसीपल जैसे महत्त्वपूर्ण पद की अधिकारिणी है। यह उसका दुर्भाग्य है कि वह सब कुछ होते हुए भी सुखों से सदैव वंचित रही है। पति के होते हुए पति सुख का अभाव है और माँ बनकर भी बेटे के छिन जाने के भय को कातर बनी भोगने रहने के लिए विवश है। उसे लगता है कि उसके नितान्त घटनाहीन जीवन में मात्र कॉलेज जाना भी एक घटना की ही अहमियत रखता है। उसकी अपनी जिन्दगी में ऐसा कुछ भी नहीं है जो क्षण भर को उत्तेजना पैदा कर सके। दस वषा के विवाहित जीवन में 'हताशा और विवशता उसे सदैव दयनीय बनाते रहे। मन्नू भंडारी लिखती हैं – ''तर्को और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे – लेटे दूसरे को दुःखी, बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में

रातें। '' 5 दाम्पत्य–जीवन में किसी भी समझौते को न स्वीकार करने में उसकी 'स्वाभिमानी वृत्ति उत्तरदायी थी।

अजय दूसरा विवाह करके और अपनी पत्नी के दो बच्चों की जिम्मेदारी उठाने के बावजूद वह बंटी से अपने को अलग नहीं कर पाता, और शायद इसीलिए वह उसके प्रति अपना उत्तरदायित्व पूरी निष्ठा के साथ निभाता है। बंटी शकुन से अलग होकर जब उसके पास रहने के लिए आता है तो नए वातावरण में अपने को 'मिसफिट पाता है तब अजय उसके सुरक्षित भविष्य के लिए उसे हॉस्टेल में भेजने का निर्णय लेता है। यद्यपि उसकी आमदनी के हिसाब से खर्चा अधिक हो रहा है लेकिन वह फिर भी बंटी को हॉस्टेल में भेजकर अपने पितृ – कर्त्तव्य को निभाता है। मन्नू भंडारी लिखती हैं कि – ''अजय बहुत इगोइस्ट है और पाजिसिव भी। यही कारण है कि वह अपने फैसले को कभी भी बदलता नहीं है और ना ही किसी की सुनता है'' । 6

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि आपका बंटी सामाजिक समस्या पर आधरित होते हुए भी 'मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन और अजय अपनी 'उन्मुक्त मानसिकता और साथ ही अनुभवहीनता के शिकार हैं। वास्तव में आज नारी स्वातंत्र के इतने 'शोर के बाद भी आज की नारी अपने परंपरागत संस्कारों के साथ बंधी हुई अब भी वहीं खड़ी है। उसे पत्नी, कामकाजी महिला और माँ की तिहरी भूमिका निभानी पड़ती हैं। जिसके कारण उसके व्यवहार में जटिलता आ जाना कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसे में भी पति का उसकी स्थिति को समझने की बजाय अपनी रूचि उस पर थोपना निश्चय ही संघर्ष को जन्म देता है। यह स्थिति तब और भी विकट हो जाती है जब पति–पत्नी में पारस्परिक सामंजस्य का अभाव होता है। शकुन और अजय–दोनों ही अहं ग्रनिथ के शिकार हैं। एक दूसरे के व्यक्तित्व को बौना करना अहं को क्षति पहुँचाना, भावात्मक स्तर पर संबंधों को कमजोर बनाना, एक दूसरे को हीनता का बोध कराना आदि कारण दोनों को तलाक के कगार पर पहुँचा देते हैं। कुंठाएँ और महत्वाकांक्षाएँ उनके जीवन पर इतनी हावी हो जाती हैं कि वे दोनों ही विवाह जैसे पवित्रा संबंध को तोड़ने पर विवश हो जाते हैं। बंटी किन्हीं एक – दो घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है। अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग सिथतियों में ...।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

1. आपका बंटी मन्नू भंडारी पृष्ठ संख्या 31
2. आपका बंटी मन्नू भंडारी पष्ठ संख्या 98
3. आपका बंटी मन्नू भंडारी पृष्ठ संख्या 40
4. आपका बंटी मन्नू भंडारी पृष्ठ संख्या 80
5. आपका बंटी मन्नू भंडारी पृष्ठ संख्या 28
6. आपका बंटी मन्नू भंडारी पृष्ठ संख्या 112
7. आधुनिक हिंदी उपन्यासडॉ. निर्मला जैन